

वेबर का औद्योगिक अवस्थिति (स्थानीयकरण)

सिद्धान्त

[WEBER'S INDUSTRIAL LOCATION THEORY]

वेबर का औद्योगिक अवस्थिति (स्थानीयकरण)

(WEBER'S INDUSTRIAL LOCATION THEORY)

उद्यम उद्योग का आधार है। विकसित उद्योग देश को समृद्ध और परिवार को उच्च जीवन-स्तर प्रदान करते हैं। स्वयं उद्योग अनेक प्रकार की प्राकृतिक एवं मानव निर्मित सुविधाओं पर निर्भर है। ऐसी सुविधा या वस्तुओं का विश्व के भूतल पर वितरण असमान एवं विषम है। साथ ही उद्योग कच्चे माल पर, कुछ स्थानीय माँग पर एवं अन्य कुछ विश्वव्यापी माँग अथवा उन्नत तकनीक के अनुकूल वातावरण में ही विकसित हो सकते हैं। इसी कारण लोहा, इस्पात निर्माण उद्योग मुख्यतः जर्मनी, रूस, जापान, फ्रान्स, संयुक्त राज्य अमेरिका आदि में अधिक उन्नत अवस्था में है। कनाडा, नॉर्वे, फिनलैण्ड व स्वीडन में कागज उद्योग; इंग्लैण्ड, भारत, चीन, दक्षिणी संयुक्त राज्य अमेरिका में सूती वस्त्र उद्योग अधिक केन्द्रित हुए हैं। इस प्रकार, किसी स्थान विशेष पर विशेष उद्योग के केन्द्रित होने की प्रवृत्ति को उद्योगों का स्थानीयकरण कहते हैं। विश्व के समस्त देश समान रूप से उपयोग के स्थानीयकरण के लिए अनुकूल नहीं हैं। अतः किसी प्रदेश में उद्योगों के स्थानीयकरण के लिए निम्नांकित कारक अनुकूल होने चाहिए।

- (1) पूँजी की सुलभता,
- (2) कच्चे माल की निकटता,
- (3) शक्ति के साधनों की निकटता,
- (4) परिवहन के साधनों की सुविधा,
- (5) बाजार की निकटता,
- (6) अनुकूल जलवायु,
- (7) कुशल और सस्ते श्रमिक,
- (8) सरकारी संरक्षण,
- (9) पूर्वारम्भ का लाभ।

अल्फ्रेड वेबर का औद्योगिक अवस्थिति सिद्धान्त

(ALFRED WEBER'S INDUSTRIAL LOCATION THEORY)

उद्योग-धन्धे किसी भी देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं। उद्योगों की स्थापना हेतु अल्फ्रेड वेबर का सिद्धान्त अत्यन्त उपयोगी है। अल्फ्रेड वेबर एक जर्मन अर्थशास्त्री थे। उद्योगों की अवस्थिति के सम्बन्ध में इनसे पूर्व भी जर्मन विद्वानों ने कुछ किया था, किन्तु सम्यक् विवेचन वेबर महोदय ने ही 1909 में दिया, जब उनका सिद्धान्त 'Uber den standon den Industries' नामक पुस्तक में प्रकाशित हुआ। जिसका 1929 में 'Theory of Location of Industries' के नाम से फ्रेडरिक द्वारा अनुवाद किया गया।

पूर्व मान्यताएँ

वेबर महोदय ने अपने सिद्धान्त के परिपालन में विभिन्न मान्यताओं का सहारा लिया है—

- (1) उद्योगों की स्थापना हेतु समान प्रदेश की कल्पना की जिसमें जलवायु, स्थलाकृति, मानव प्रजाति, जनसंख्या एवं तकनीकी आदि सर्वत्र एकरूपता वाले हों और एक ही राजनयिक प्रशासन के अन्तर्गत हो।
- (2) कच्ची सामग्री के स्रोत मालूम हैं तथा उनकी स्थिति का पूरा ज्ञान है। इनमें कुछ सर्वत्र सुलभ होते हैं, जबकि कुछ केवल निश्चित क्षेत्रों में ही मिलते हैं।
- (3) बाजार की स्थिति एवं आकार ज्ञात है। बाजार एक-दूसरे से पृथक बिन्दु के रूप में है, इसे पूर्ण प्रतिस्पर्धा की स्थिति माना गया है।
- (4) श्रम निश्चित स्थानों में ही मिलते हैं तथा वहाँ पूर्व निर्धारित मजदूरी पर वांछित मात्रा में उपलब्ध हैं।
- (5) परिवहन लागत केवल भार तथा दूरी के अनुपात में बढ़ता है।

महत्वपूर्ण परिभाषित शब्द

वेबर ने अपने सिद्धान्त को समझाने के लिए कुछ पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग किया है, जिनका विवरण निम्नानुसार है—

(1) सर्वत्र सुलभ पदार्थ (Ubiquities)—वे पदार्थ जो सर्वत्र प्राप्य हैं तथा जिनका सर्वत्र एक ही मूल्य चुकाना पड़ता है।

(2) स्थानीय पदार्थ (Localized Materials)—वे पदार्थ जो किसी स्थान या क्षेत्र विशेष में ही मिलते हैं।

(3) शुद्ध पदार्थ (Pure Materials)—वे पदार्थ जिनका वजन उत्पादन प्रक्रिया में कम नहीं होता है। उदाहरणार्थ—सूत में वस्त्र तैयार करने पर वजन में कमी नहीं आती।

(4) सकल पदार्थ (Gross Materials)—वे पदार्थ जिनका वजन उत्पादन प्रक्रिया में कम हो जाता है, जैसे गन्ना से चीनी बनाने पर भार या उत्पादन कम हो जाता है।

(5) पदार्थ सूचकांक (Material Index)—कच्ची सामग्री तथा उससे निर्मित वस्तुओं के वजन के अनुपात को पदार्थ सूचकांक कहा जाता है। यदि निर्मित माल कच्चे माल के बराबर है, तो सूचकांक एक होगा और यदि निर्मित माल कच्चे माल से कम है, तो पदार्थ सूचकांक सदैव एक से अधिक होगा।

(6) स्थानीयकरण भार (Locational Weight)—परिवहन किये जाने वाले कुल पदार्थ एवं निर्मित वस्तु के भार को स्थानीयकरण भार कहा जाता है। सर्वत्र सुलभ पदार्थों का प्रयोग करने वाले उद्योगों में यह भार 1 (एक) होता है, क्योंकि इसमें निर्मित वस्तु का भी भार परिवहन करना पड़ता है, किन्तु यदि शुद्ध पदार्थ से वस्तुनिर्मित है तो वस्तु के भार के बराबर ही कच्चे माल का परिवहन करना पड़ता है अतः इसका भार 2 (दो) होगा।

(7) श्रम लागत सूचकांक (Index of Labour Cost)—निर्मित वस्तु की प्रति इकाई तैयार करने में लगने वाली औसत श्रम लागत को श्रम लागत सूचकांक कहा जाता है।

(8) श्रम गुणांक (Labour Coefficient)—श्रम लागत सूचकांक एवं स्थानीयकरण भार के अनुपात को श्रम गुणांक कहा जाता है।

(9) आइसोडापेन (Isodapane)—न्यूनतम परिवहन लागत बिन्दु के चारों ओर समान अतिरिक्त परिवहन व्यय सूचक रेखा को आइसोडापेन कहा जाता है।

उद्योगों के स्थानीयकरण के कारक

(FACTORS OF INDUSTRIAL LOCATION)

वेबर महोदय के अनुसार उद्योगों की अवस्थिति (स्थानीयकरण) में तीन कारक विशेष प्रभाव डालते हैं—

(1) परिवहन लागत, (2) श्रम लागत, (3) समूहीकरण।

परिवहन लागतों का प्रभाव (Effect of Transportation Costs)

वेबर ने परिवहन लागत के प्रभावों को दो अवस्थाओं से प्रभावित माना है—

(1) प्रथम अवस्था—इस अवस्था में यदि एक ही कच्चे माल की आवश्यकता हो तथा उत्पादित वस्तु के लिए एक ही बाजार हो तो उद्योग की स्थापना में निम्नलिखित चार सम्भावनाएँ होंगी—

(i) यदि कच्चा माल सर्वत्र सुलभ है तो उद्योग बाजार में स्थापित होगा, क्योंकि इस स्थिति में परिवहन पर व्यय नहीं होगा।

(ii) यदि कच्चा माल शुद्ध और स्थानीय है, तो उद्योग कच्चे माल के स्रोत पर या बाजार या इन दोनों के बीच कहीं भी लग सकता है। इस स्थिति में परिवहन व्यय किसी भी हालत में बराबर ही पड़ेगा।

(iii) यदि कच्चा माल केवल सकल पदार्थ है तो उद्योग कच्चे माल के स्रोत पर स्थापित होगा, क्योंकि इस स्थिति में निर्माण प्रक्रिया में कम होने वाले पदार्थ का परिवहन खर्च नहीं देना पड़ेगा।

(iv) यदि उद्योग में शुद्ध एवं सर्वत्र सुलभ पदार्थों का प्रयोग होता है, तो उद्योग बाजार बिन्दु पर ही स्थापित होगा क्योंकि शुद्ध पदार्थ के लिए किसी भी स्थान पर उद्योग स्थापित हो, खर्च में अन्तर नहीं आयेगा, जबकि बाजार पर उद्योग स्थापित होने से उत्पादित वस्तु से सर्वत्र सुलभ पदार्थ के लिए परिवहन खर्च नहीं देना पड़ेगा।

(2) **द्वितीय अवस्था**— यदि दो या अधिक कच्चे माल के स्रोत हों तथा एक ही बाजार हो। दो कच्चे माल से वेबर का तात्पर्य ऐसे पदार्थों से है जो अलग-अलग स्रोतों से मिलते हैं, किन्तु उत्पादित माल के लिए बाजार एक ही है इस अवस्था में उद्योग की स्थापना में निम्न सम्भावनाएँ हैं—

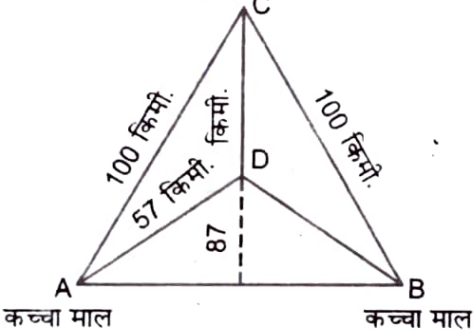
(i) यदि दोनों कच्चे माल सर्वत्र सुलभ हैं, तो उद्योग की स्थापना बाजार बिन्दु पर ही होगी, क्योंकि इस स्थिति में निर्मित वस्तु पर परिवहन व्यय नहीं होगा।

(ii) यदि दो कच्चे पदार्थों में से एक सर्वत्र सुलभ और दूसरा स्थानागत पदार्थ हो जो बाजार से बाहर स्थित हो और दोनों शुद्ध पदार्थ हों तो उद्योग बाजार में ही स्थापित होगा। इस स्थिति में बाजार से दूर स्थित कच्चे माल पर ही परिवहन व्यय देना पड़ेगा। स्थानागत पदार्थ वाले स्थान पर उद्योग स्थापित करने से तैयार माल का परिवहन व्यय देना पड़ेगा।

(iii) दो या दो से अधिक शुद्ध पदार्थों को प्रयुक्त करने वाला उद्योग भी बाजार बिन्दु पर ही स्थापित होगा, क्योंकि बाजार ही न्यूनतम लागत का बिन्दु होता है। यदि एक शुद्ध पदार्थ बाजार तक ले जाते समय उस स्थान से गुजरता है जहाँ दूसरा शुद्ध पदार्थ पाया जाता है, तो इसके पास भी उद्योग स्थापित किया जा सकता है, किन्तु बाजार बिन्दु पर ही उद्योग की स्थापना अधिक हितकर होगी, क्योंकि द्वितीय स्थान पर कच्चा माल उतारने एवं चढ़ाने में अतिरिक्त व्यय देना पड़ेगा।

(iv) यदि सभी पदार्थ सकल पदार्थ एवं स्थानागत हैं तो उद्योग की स्थिति का पता करना कुछ कठिन है। इस समस्या से बचने के लिए वेबर ने **स्थानीयकरण त्रिभुज (Locational Triangle)** विधि से समझाया है—

यदि किसी उद्योग में प्रयुक्त कच्चे मालों के A और B स्रोत हैं तथा C स्थान पर बाजार है, तो यह उद्योग न तो बाजार बिन्दु पर स्थापित हो सकता है और न ही A और B कच्चे माल के स्रोत पर, क्योंकि बाजार तक उस माल पर भी व्यय देना पड़ेगा जो निर्माण प्रक्रिया में व्यर्थ हो जाता है।



चित्र 4.1 : वेबर का स्थानीयकरण त्रिभुज

इस स्थिति में उद्योग इस त्रिभुज के भीतर ही स्थापित होगा। मान लिया कि सकल पदार्थों का भार निर्माण प्रक्रिया में 50% कम हो जाता है तथा एक टन निर्मित वस्तु के लिए 2 टन की आवश्यकता है। A, B तथा C प्रत्येक स्थान एक-दूसरे से 100 किलोमीटर की दूरी पर स्थित हैं। यदि उद्योग A अथवा B पर स्थापित किया जाए तो कच्चा माल 2 टन × 100 किमी. = 200 टन किमी. + यहाँ से 100 किमी. दूर बाजार तक निर्मित वस्तु पर परिवहन खर्च = (1 टन × 100 किमी. = 100 टन किमी.) अर्थात् कुल 300 टन किमी. (200 टन किमी. + 100 टन किमी.) पर खर्च देना पड़ेगा।

यदि उद्योग बाजार बिन्दु पर स्थापित किया जाता है तो दोनों कच्चे पदार्थ (2 टन × 100 टन किमी.) = 200 टन किमी. + 2 टन × 100 टन किमी. = 200 टन किमी.) = 400 टन किमी. परिवहन खर्च देना पड़ेगा। यदि उद्योग A एवं B के बीच में स्थापित किया जाता है तो परिवहन व्यय 287 टन किमी. (2 टन × 50 किमी. = 100 टन किमी. + 2 टन × 50 किमी. = 100 टन किमी. + 2 टन × 87 किमी. = 87 टन किमी. खर्च देना पड़ेगा। यदि उद्योग D पर स्थापित किया जाए तो परिवहन खर्च 285 टन किमी. (2 टन × 57 किमी. = 114 टन किमी. + 2 टन × 57 किमी. = 114 टन किमी. + 1 टन × 57 किमी. = 57 टन किमी.) व्यय होगा। इस प्रकार D बिन्दु पर उद्योग की स्थापना सर्वोत्तम है, क्योंकि यहाँ परिवहन खर्च सबसे न्यूनतम है। यह बिन्दु त्रिभुज का केन्द्रीय बिन्दु होगा।

जब कच्चे माल से विभिन्न पदार्थ बनते हैं, तो उनके भार में कमी भिन्न-भिन्न अनुपात में होती है तथा इनकी मात्रा भी अलग-अलग हो सकती है। इस अवस्था में उद्योग की स्थापना त्रिभुज के बीच में न होकर अन्यत्र होगी।

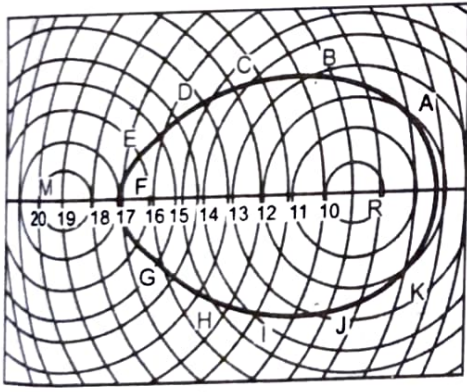
किसी उद्योग को स्थापित करने के लिए कच्चा माल 2 टन तथा 3 टन ईंधन की आवश्यकता है। कच्चे माल से बाजार 100 किमी. तथा ईंधन 120 किमी. दूर है। ईंधन से बाजार 80 किमी. दूर है। यदि उद्योग की स्थापना बाजार केन्द्र पर की जाए तो ईंधन 3 टन × 80 किमी. = 240 टन किमी. + कच्चा माल 2 टन × 100 किमी. = 200 टन किमी. अर्थात् 240 टन किमी. + 200 टन किमी. = 400 टन किमी. परिवहन व्यय होगा। यदि उद्योग कच्चे माल की प्राप्ति स्थान पर स्थापित किया जाए तो ईंधन 3 टन × 120 किमी. = 360 टन किमी. + निर्मित

वस्तु 1 टन × 100 किमी. = 100 टन किमी. अर्थात् 460 टन किमी. परिवहन व्यय होगा। अब यदि इसे ईंधन प्राप्ति स्रोत पर लगाया जाए तो परिवहन व्यय 2 टन × 120 किमी. 240 टन किमी. कुल 320 टन किमी. देय होगा। इस प्रकार ईंधन प्राप्ति पर उद्योग स्थापित करने में न्यूनतम परिवहन लागत व्यय होगी।

वेबर ने सभी पदार्थों के सभी दिशाओं में परिवहन की समान किराया दर की कल्पना की है। इसके बाद उन्होंने भाड़ा दर पर विचार किया तथा परिवहन किये जाने वाले वास्तविक भार को आदर्श भार में परिवर्तित किया। उन्होंने स्वीकार किया कि वजन और दूरी की तुलना में प्रति इकाई दूर पर लगने वाली लागत अधिक महत्वपूर्ण है।

श्रम लागतों का प्रभाव (Effect of Labour Cost)

उद्योगों की स्थिति के लिए परिवहन व्यय के अतिरिक्त मजदूरी की लागत भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वेबर का मानना है, कि उद्योग की स्थापना न्यूनतम परिवहन लागत बिन्दु से हटकर भी उस समय हो सकती है, जबकि मजदूरी लागत बचत परिवहन वाले खर्च से अधिक हो ऐसी स्थिति में उद्यमकर्ता के सामने यह समस्या आती है कि वह कितना धन परिवहन लागत पर व्यय करे और कितना मजदूरी लागत पर। इस समस्या के समाधान हेतु वेबर महादेय ने आइसोडापेन का प्रयोग किया। परिवहन लागत की दृष्टि से न्यूनतम लागत बिन्दु से हटने पर जिन-जिन बिन्दुओं पर परिवहन खर्च में इकाई वृद्धि होती है। उन बिन्दुओं को मिलाने वाली रेखा को आइसोडापेन (Isodapane) कहा जाता है।



चित्र 4.3 : आइसोडापेन

उपर्युक्त चित्र में R बिन्दु पर कच्ची सामग्री है तथा M बिन्दु पर बाजार है। यह मान लिया गया कि प्रति इकाई उत्पादित वस्तु पर उसके दोगुने वजन की कच्ची सामग्री की आवश्यकता होती है। M बिन्दु से खींचे गये वृत्त उत्पादित वस्तु के परिवहन खर्च को दर्शाते हैं, जबकि R बिन्दु के खींचे गये वृत्त कच्ची सामग्री के परिवहन खर्च को दर्शाते हैं। यदि उद्योग R पर स्थापित किया जाए तो R से M तक परिवहन व्यय प्रति टन निर्मित वस्तु पर 10 इकाई के बराबर व्यय होगा। यदि M पर स्थापित किया जाए तो प्रति इकाई निर्मित वस्तु के लिए 2 टन कच्ची सामग्री का आयात करना पड़ेगा जिस पर लागत व्यय 2 टन × 10 इकाई = 20 टन इकाई होगा ऐसी स्थिति में उद्योग के लिए R ही न्यूनतम लागत का केन्द्र है।

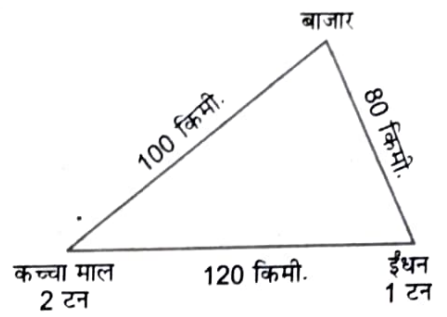
अब यदि उद्योग B पर स्थापित किया जाए तो R से B तक पर कच्ची सामग्री पर परिवहन व्यय 2 टन × 4 इकाई = 8 टन इकाई तथा वहाँ से M तक उत्पादित वस्तु पर 1 टन × 10 इकाई = 10 टन इकाई खर्च होता है। इस प्रकार कच्चा माल तथा तैयार माल को बाजार तक पहुँचाने में 8 टन इकाई + 10 टन इकाई अर्थात् 18 टन इकाई खर्च होता है। इस प्रकार 8 टन इकाई अतिरिक्त खर्च होगा। A, B, C, D आदि बिन्दु आइसोडापेन पर स्थित हैं जिनका मान 18 है। इस प्रकार उद्योग उस स्थिति में लगाया जा सकता है, जबकि इस प्रकार उपलब्ध श्रम लागत प्रति टन 8 इकाई बचत हो।

श्रम के महत्व को ज्ञात करने के लिए वेबर ने श्रम लागत सूचकांक का उपयोग किया। यह उत्पादित वस्तु के प्रति टन लगने वाली औसत श्रम लागत है। यह सूचकांक जितना ही अधिक होगा वह उद्योग न्यूनतम परिवहन लागत से उतना ही दूर हट सकता है।

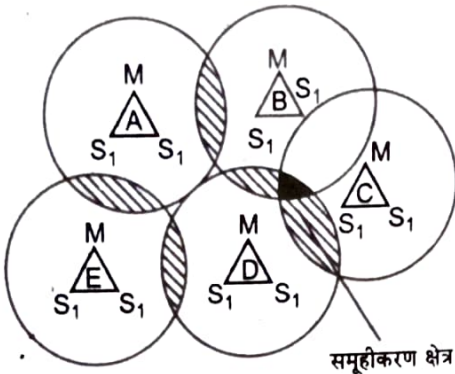
समूहीकरण का प्रभाव (Effect of Agglomeration)

उद्योग की स्थापना में समूहीकरण का भी प्रभाव पड़ता है। इससे प्रति इकाई उत्पादन लागत में कमी आती है। उन्होंने बताया कि कोई कारखाना निम्नलिखित प्रकार से समूहीकरण का लाभ उठा सकता है—

(1) कारखाने का विस्तार करके उत्पादन बढ़ाकर बड़े पैमाने पर उत्पादन जन्य लाभ प्राप्त होता है।



चित्र 4.2 : उद्योगों की अवस्थिति पर परिवहन लागत का प्रभाव



चित्र 4.4 : उद्योगों की अवस्थिति पर समूहन प्रभाव

अवस्थिति से 20 इकाई के आइसोडापेन खींचे गये हैं। A, B एवं C उद्योगों के आइसोडापेन के अन्दर एक छोटा-सा भाग आता है।

इसे समूहीकरण क्षेत्र कहा जाता है। यहाँ तीनों कारखाने स्थापित हो सकते हैं, क्योंकि यहाँ प्रतिवस्तु इकाई निर्माण में 20 इकाई की सुविधा होगी। इसीलिए यहाँ उद्योग स्थापित होने के लिए प्रवृत्त होंगे। यदि समूहीकरण में निरन्तर वृद्धि होती जाए तो उससे उत्पन्न लाभ उसी अनुपात में बढ़ सकता है। परन्तु ऐसा तभी होगा जब एक ही साथ कई उद्योगी एक स्थान पर कारखाने स्थापित करें।

वेबर के सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of Weber's Theory)

वेबर द्वारा प्रस्तुत उद्योगों की अवस्थिति सम्बन्धी सिद्धान्त की कटु आलोचना हुई, क्योंकि वर्तमान समय में ये मान्यताएँ अमान्य हैं। वेबर महोदय का सिद्धान्त मान्यताओं पर आधारित था। जो वास्तविक जगत में चरितार्थ नहीं होता है। वेबर के सिद्धान्त की आलोचना के निम्नलिखित तथ्य प्रमुख हैं—

(1) वेबर ने केवल परिवहन लागत पर ही ध्यान दिया उन्होंने उत्पादन प्रक्रिया लागत पर ध्यान नहीं दिया, जबकि वास्तव में अभीष्टतम स्थिति उत्पादन स्तर पर निर्भर करती है।

(2) इनका पूरा सिद्धान्त कच्ची सामग्री के स्रोत एवं बाजार को केन्द्र मानकर ही विश्लेषित किया गया है, जबकि कृषिगत एवं वन्य उत्पादन सम्बन्धी कच्ची सामग्री तथा उत्पादित पदार्थ की माँग का क्षेत्रीय विस्तार होता है।

(3) वेबर ने परिवहन में अन्तर भार तथा दूरी के अनुपात में माना। उन्होंने परिवहन लागत सभी जगह समान मानी है, जबकि ऐसा नहीं है। परिवहन की लागत दूरी बढ़ने से अनुपात में कम होती है। यदि कच्चे माल के परिवहन में असामान्य वृद्धि हो तो विकल्प के रूप में अन्य स्रोतों का प्रयोग किया जा सकता है। इससे उत्पादन में लगने वाले अन्य उपादानों के सापेक्षिक महत्व में भी अन्तर आ सकता है।

(4) स्थिति निर्धारण के लिए वेबर द्वारा प्रयोग की जाने वाली न्यूनतम परिवहन लागत विधि न्यूनतम सकल लागत विधि की तुलना में निकृष्ट है इसी तरह जब लागत सम्बन्धी सूचनाएँ उपलब्ध हों, तो पदार्थ सूचकांक व श्रम गुणांक सूचकांकों की उपयोगिता कम रह जाती है।

(5) श्रम गुणांक में श्रम लागत एवं अन्य प्रकार की लागतों में अन्तर्सम्बन्ध स्थापित होना चाहिए न कि उनके भार से वेबर ने श्रम को असीमित आपूर्ति एवं निश्चित मजदूरी की मान्यता द्वारा श्रमिक प्रव्रजन तथा विकासशील क्षेत्रों से श्रम के अभाव की उपेक्षा की।

(6) वेबर की एकत्रीकरण व समक्षेत्र सम्बन्धी परिकल्पनाएँ भी असत्य हैं। उन्होंने माँग की सर्वत्र समान होने की कल्पना की है, जो वास्तविकता से परे है।

(7) वेबर ने उद्योगों की अवस्थिति में स्थानीयकरण त्रिभुज विधि का ही सहारा लिया, जबकि परिवहन खर्च की वास्तविक जगत् में पाई जाने वाली विशेषताओं के आधार पर स्थानीयकरण त्रिभुज में परिष्कार करके स्थापना बिन्दु का पता लगाया जा सकता है।

(2) एक ही उद्योग के कई कारखाने एक ही जगह स्थापित होने से निश्चित तकनीकी सेवाएँ, अधिक श्रम विभाजन तथा उत्पादित वस्तु के क्रय-विक्रय सम्बन्धी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।

विभाजन तथा उत्पादित वस्तु के क्रय-विक्रय सम्बन्धी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।

(3) विभिन्न प्रकार के उद्योग एक ही स्थान पर स्थापित होने से सामूहिक सामान्य सुविधाएँ यथा परिवहन के साधन आदि उपलब्ध हो जाती हैं।

वेबर ने समूहीकरण के प्रभाव को उपयुक्त चित्र द्वारा समझाया है। यहाँ किसी उद्योग के पाँच कारखाने हैं प्रत्येक कारखाना स्थानीयकरण त्रिभुज के अन्दर स्थित है। प्रत्येक उद्योग की

स्थानीयकरण त्रिभुज के अन्दर एक

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वेबर का उद्योगों की अवस्थिति सम्बन्धी सिद्धान्त आलोचनाओं के बाद भी
कई दृष्टिकोणों से उपयोगी है। यह सिद्धान्त औद्योगिक स्थानीयकरण सम्बन्धी क्रमबद्ध विश्लेषण की दिशा में
महत्वपूर्ण एवं आरम्भिक कदम था। विभिन्न विद्वानों एवं विचारकों ने वेबर के विश्लेषण की विधियों को परिष्कृत
करके सार्थक बनाने का प्रयास किया।